



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 164] नई दिल्ली, मंगलवार, अगस्त 30, 1977/भाद्र 8, 1899

No 164] NEW DELHI, TUESDAY, AUGUST 30, 1977/BHADRA 8, 1899

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)

(Banking Division)

RESOLUTION

New Delhi, the 30th August 1977

No. 16-8/77-IF II—Finance Minister, in his reply to a question in the Rajya Sabha on 19-7-1977 on the credit facilities sanctioned to Kohinoor Mills Company Limited, Bombay, had given an assurance that an independent enquiry will be ordered to find out whether the various credit facilities granted to the company by Central Bank of India were in accordance with the normal banking practices and procedures. In pursuance of this assurance, Government hereby appoint Shri D. N. Ghosh, Director, Office of the Comptroller and Auditor General New Delhi, as the one-man Enquiry Committee to go into the matter.

2. The Committee will look into and fix responsibility in respect of the following:—

- (i) Whether advances/facilities allowed by Central Bank of India to the company since the beginning of 1972 were made in due course of banking operations and after taking due sanctions and observing normal safeguards and precautions;
- (ii) Whether there were any lapses, irregularities or impropriety in the conduct of the account by Central Bank of India;

- (iii) Whether any undue influence was exercised or undue favour shown in the grant of advances/facilities to the company by Central Bank of India;
- (iv) Whether the advances/facilities made were duly authorised by the Reserve Bank of India in terms of the procedures in force and if not, the circumstances under which such authorisation was not given;
- (v) How far the appraisal, follow up and control mechanism in Central Bank of India was effective and if it was not, the reasons therefor

If it comes to the notice of the Committee that, during the relevant period, any other commercial bank had granted advances/facilities to the company, it will be open to the Committee to look into it, keeping in view items (i) to (v) above

3. Shri Ghosh will give his report to the Government on or about the 15th November, 1977.

ORDER

Ordered that the Resolution be published in the Gazette of India for general information

M DANDAPANI, Jt. Secy.

वित्त मंत्रालय

(आर्थिक कार्य विभाग)

(बैंकिंग प्रभाग)

सकलप

नई दिल्ली, 30 अगस्त, 1977

स० : ६-३/७७-आई एफ-II.—वित्त मंत्री ने, कोहिनूर मिल्स कम्पनी लिमिटेड, बम्बई को मंजूर की गई ऋण सुविधाओं के बारे में 19-7-1977 को राज्य सभा में एक प्रश्न के उत्तर में आश्वासन दिया था कि यह पता लगाने के लिए स्वतंत्र रूप से जांच कराने के आदेश दिए जायेंगे कि क्या सेंट्रल बैंक आफ इंडिया द्वारा इस कम्पनी को विभिन्न ऋण सुविधाएं सामान्य बैंकिंग व्यवहार और प्रक्रिया के अनुसार दी गई थी। इस आश्वासन के अनुसरण में, सरकार, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक का कार्यालय, नई दिल्ली के निदेशक श्री डी० एन० घोष को इस मामले की जांच करने के लिए एक-सदस्यीय जांच-समिति के रूप में नियुक्त करती है।

2 समिति निम्नलिखित के बारे में जांच करेगी तथा जिम्मेदारी निर्धारित करेगी.—

- (1) क्या 1972 के आरम्भ से सेंट्रल बैंक आफ इंडिया द्वारा इस कम्पनी को स्वीकृत किए गए ऋण, बैंकिंग परिचालन में यथाविधि तथा उचित मंजूरी लेने और सामान्य सुरक्षणों तथा सावधानियों के बाद दिए गए थे ;
- (2) क्या सेंट्रल बैंक आफ इंडिया द्वारा खाते के संचालन में कोई भूलें, अनियमितताएं, अथवा अनुचित व्यवहार किए गए थे ;
- (3) क्या सेंट्रल बैंक आफ इंडिया द्वारा कम्पनी को ऋण/सुविधाएं मंजूर करने में कोई अनुचित प्रभाव डाला गया था अथवा अनुचित पक्षपात दिखाया गया था ;

- (4) क्या ऋण/सुविधाएँ चालू प्रक्रिया के अनुसार भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा यथार्थिधि प्राधिकृत की गयी थी और यदि नहीं तो वे कौन सी परिस्थितियों थी जिनमें ऐसा प्राधिकरण नहीं किया गया था ,
- (5) सेंट्रल बैंक आफ इंडिया का मूल्यांकन, अनुवर्ती कार्य और नियंत्रण का तंत्र किस सीमा तक प्रभावी था और यदि वह प्रभावी नहीं था तो उसके कारण ।

यदि समिति के ध्यान में यह आता है कि सम्बन्धित अवधि के दौरान किसी अन्य वाणिज्यिक बैंक द्वारा इस कम्पनी को ऋण/सुविधाएँ मंजूर की गई थी तो उक्त विषय (1) से (4) तक को ध्यान में रखते हुए उसकी जाच करने के लिए यह समिति स्वतंत्र होगी ।

3 श्री घोष अपनी रिपोर्ट 15 नवम्बर, 1977 को अथवा उसके आस पास सरकार को प्रस्तुत कर देंगे ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि सामान्य सूचना के लिए इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

एम० दण्डपाणि, संयुक्त सचिव ।

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मद्रासालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा
मुद्रित तथा नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, दिल्ली द्वारा प्रकाशित 1977

PRINTED BY THE GENERAL MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, MINTO ROAD,
NEW DELHI AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1977

